નિર્વાણકાણ્ડ (ભાષા)

श्री भैया भगवतीदास कृत

स्वर : पंडित भरतभाई महेता ज्ञायक, सूरत

समकित धारा

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

वीतराग वन्दौं सदा, भावसहित सिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

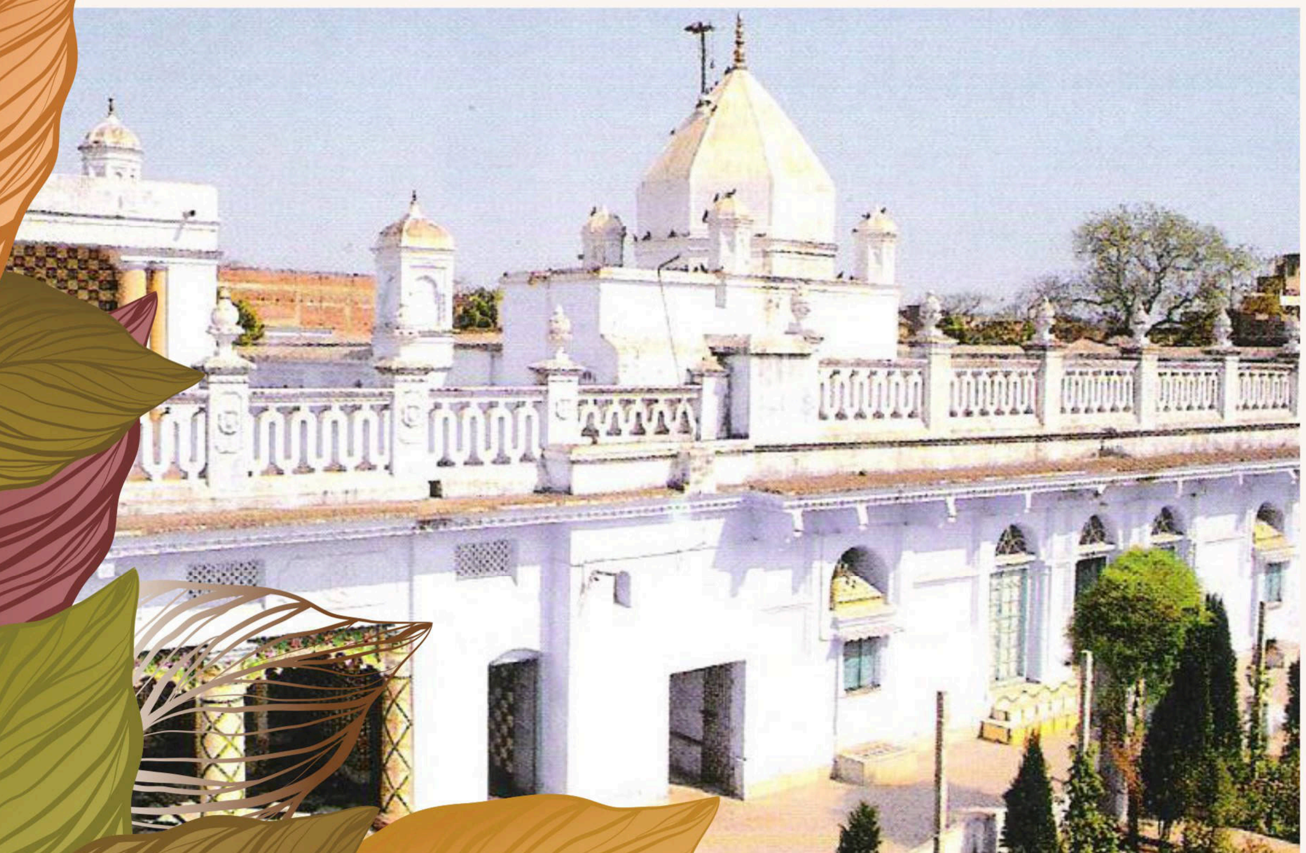

(चौपाई)

अष्टापद आदीश्वर स्वामि,
वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

नेमिनाथ स्वामी गिरनार,
बन्दौं भाव-भगति उर धार ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर,
पावापुरि स्वामी महावीर।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

शिखर समेद जिनेसुर बीस,
भावसहित बन्दौं निश-दीस ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द,
सायरदत्त आदि गुणवृन्द।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

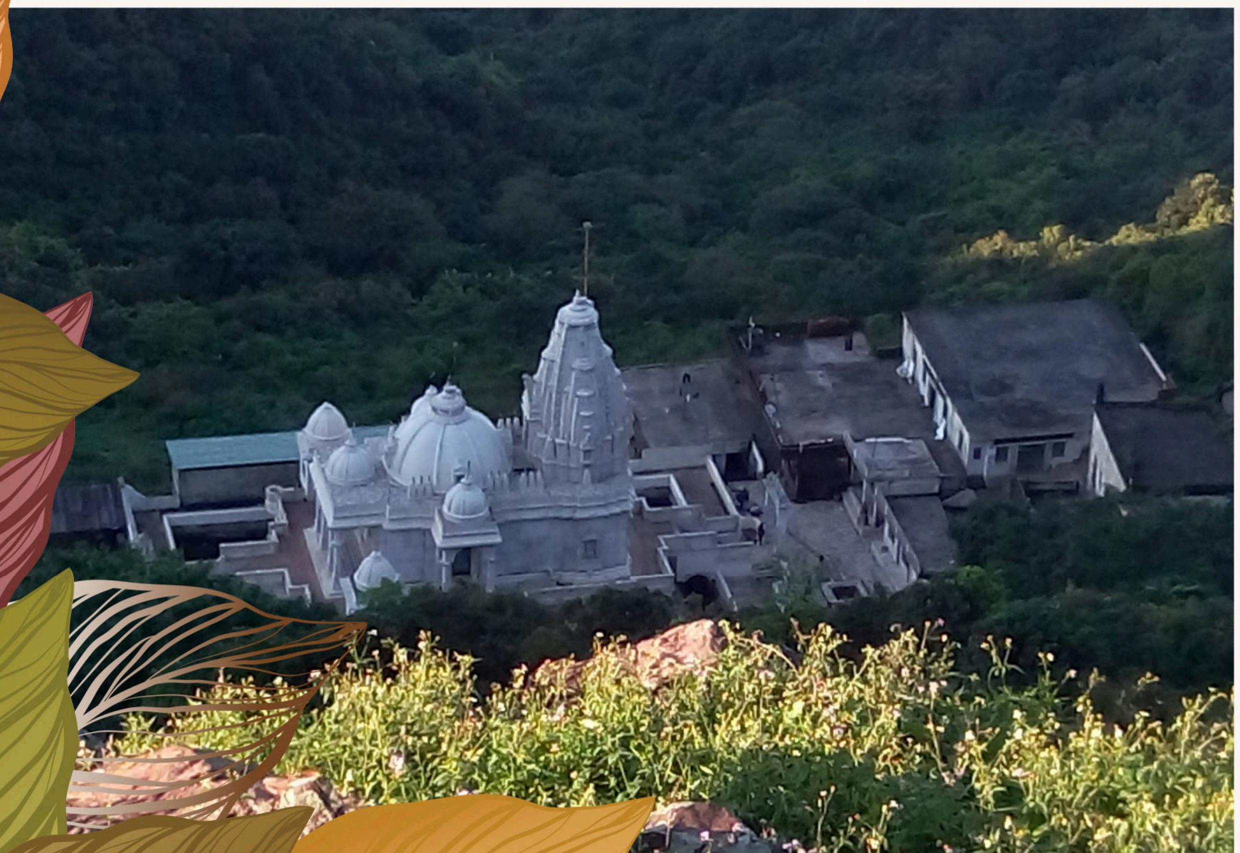

(चौपाई)

नक्षर तारवर मुनि उठकोड़ि,
बन्दौं भावसहित कर जोड़ि ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

श्री गिरनार शिखर विख्यात,
कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

शम्भु प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय,
अनिरुध आदि नमूँ तसुपाय ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

रामचन्द के सुत द्वै वीर,
लाडनरिन्द आदि गुणधीर।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार,
पावागिरि बन्दौं निरधार ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

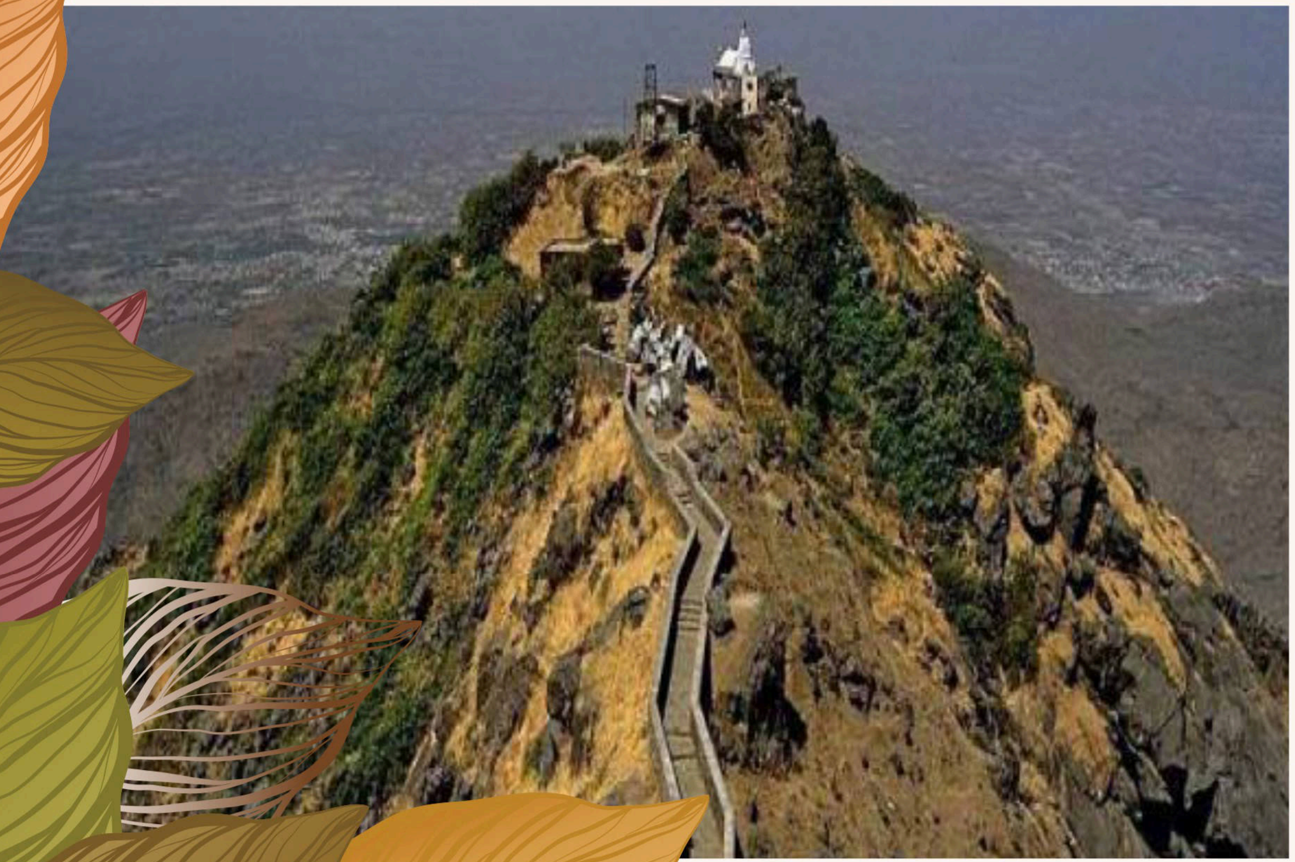

(चौपाई)

पाण्डव तीन द्रविड़-राजान,
आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

श्री शत्रुंजयगिरि के सीस,
भावसहित बन्दौं निश-दीस ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

जे बलभद्र मुकति में गये,
आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

श्री गजपन्थ शिखर सुविशाल,
तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

राम हणू सुग्रीव सुडील,
गव गवाख्य नील महानील।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

कोड़ि निन्याणव मुक्ति पयान,
तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

नंग-अनंगकुमार सुजान,
पाँच कोड़ि अरु अर्द्ध प्रमाण।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

मुक्ति गये सोनागिरि शीश,
ते बन्दौं त्रिभुवनपति ईस ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

रावण के सुत आदिकुमार,
मुक्ति गये रेवा-तट सार।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

कोटि पंच अरु लाख पचास,
ते बन्दौं धरि परम हुलास।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

रेवानदी सिद्धवर कूट,
पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

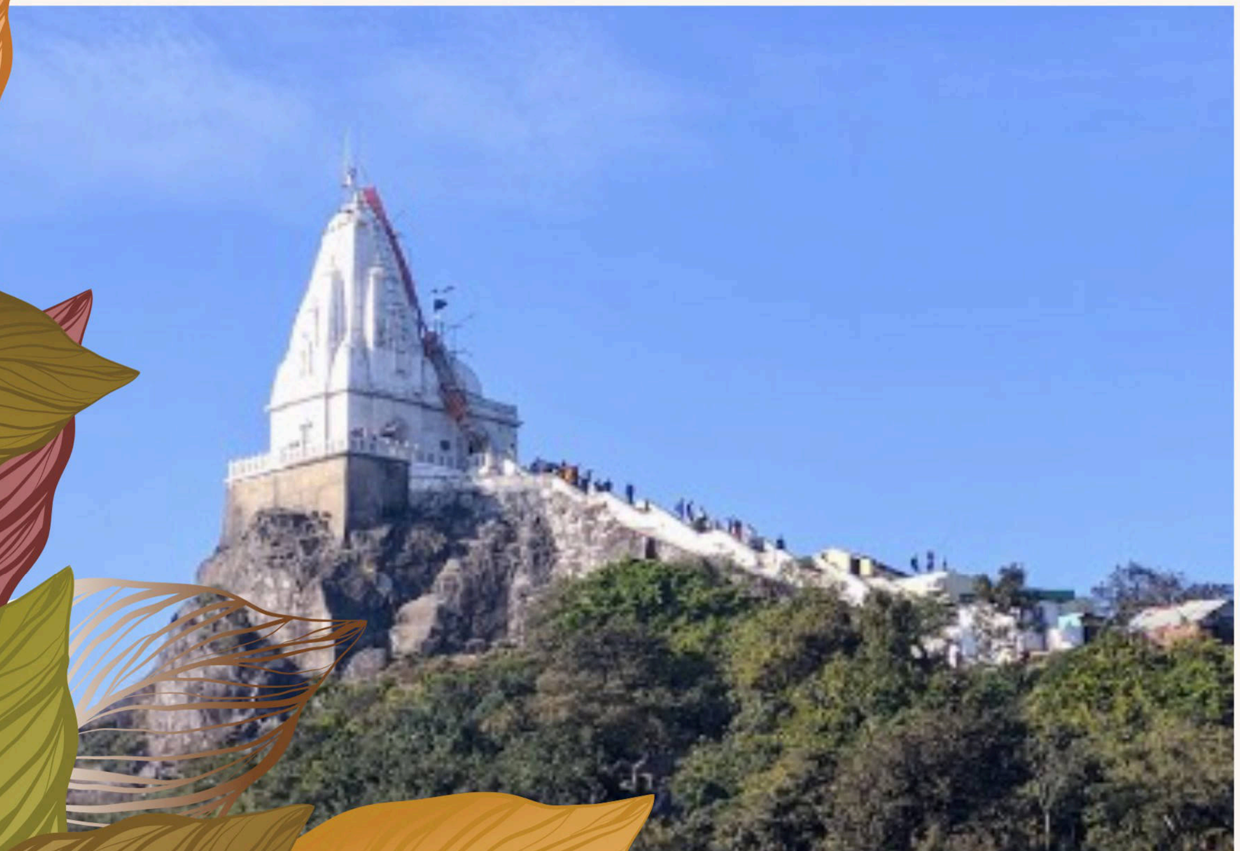

(चौपाई)

द्वै चक्री दश कामकुमार,
ऊठकोड़ि वन्दौं भव पार ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

बड़वानी बड़नगर सुचंग,
दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण,
ते बन्दौं भव-सागर-तर्ण।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

सुवरणभद्र आदि मुनि चार,
पावागिरि-वर शिखर मँझार।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

चेलना नदी-तीर के पास,
मुक्ति गये बन्दौं नित तास ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

फलहोड़ी बड़गाम अनूप,
पश्चिम दिशा द्रोणगिररूप।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहाँ,
मुक्ति गये बन्दौं नित तहाँ ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

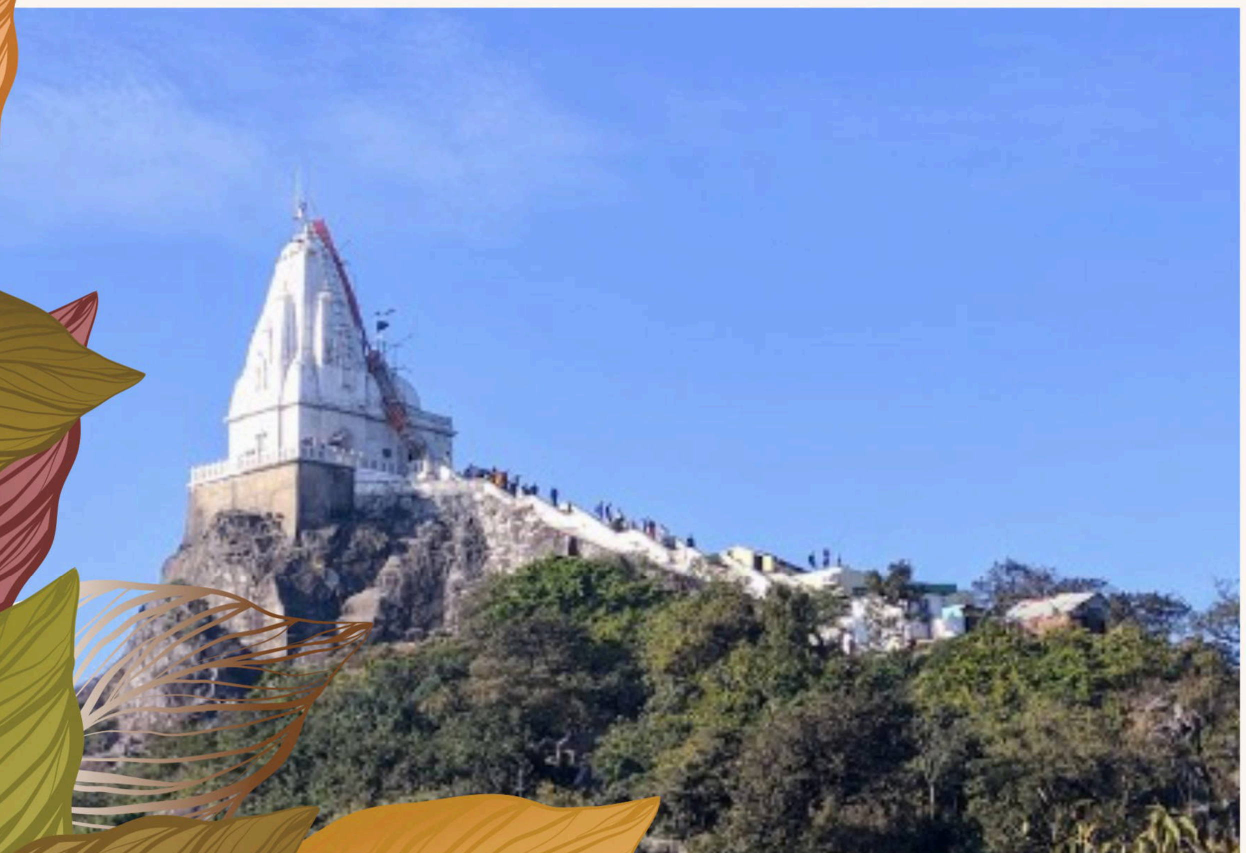

(चौपाई)

बालि महाबालि मुनि दोय,
नागकुमार मिले त्रय होय।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

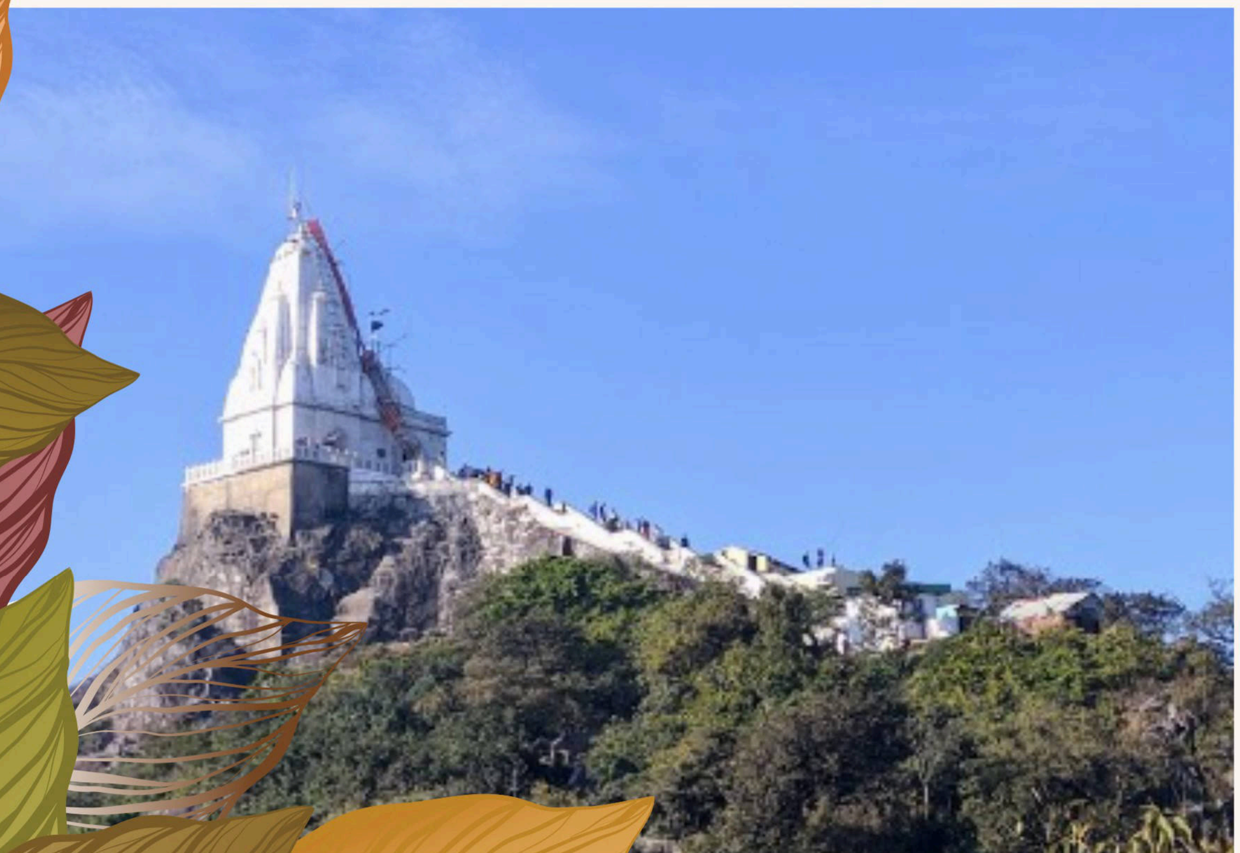

(चौपाई)

श्री अष्टापद मुक्ति मँझार,
ते बन्दौं नित सुरत सँभार ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

अचलापुर की दिश ईसान,
तहाँ मेंढ़गिरि नाम प्रधान।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

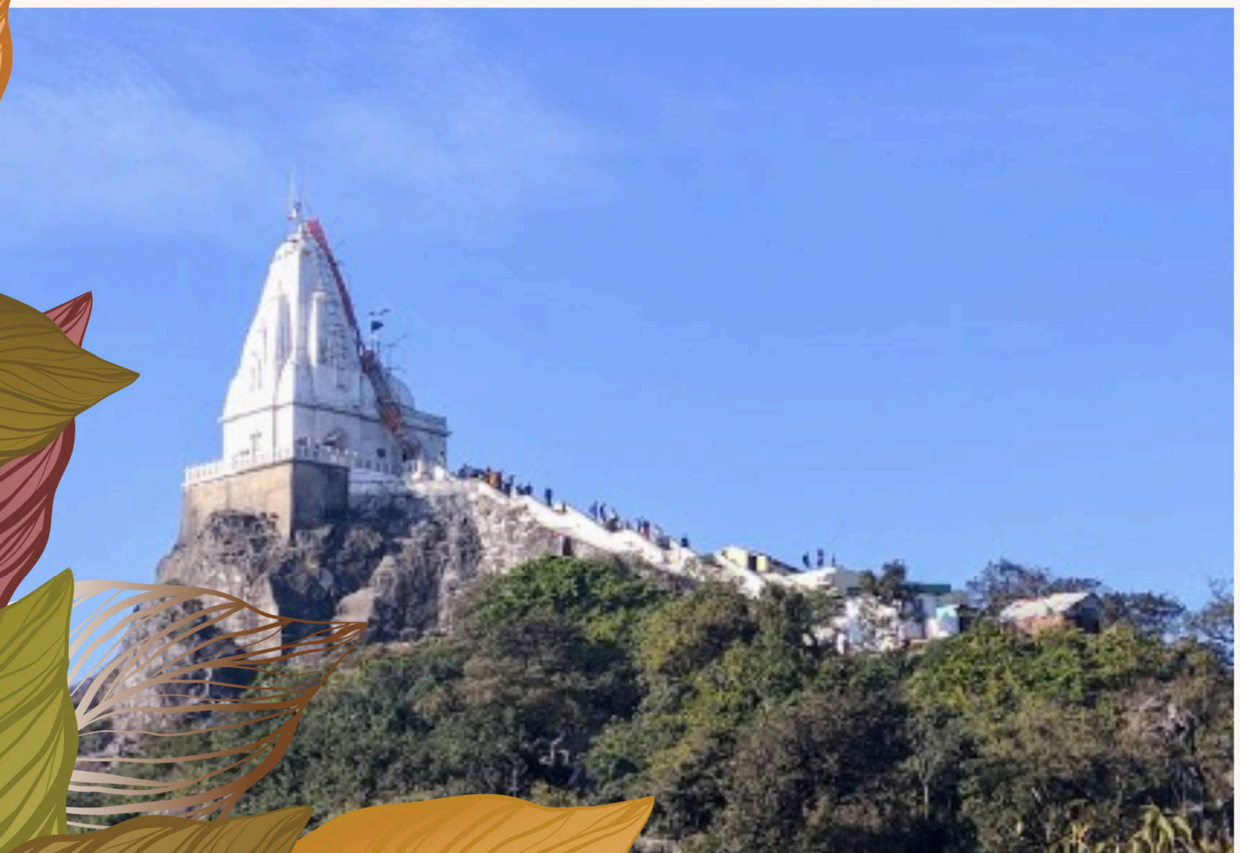

(चौपाई)

साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय,
तिनके चरण नमूँ चित लाय ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

वंशस्थल वन के ढिग होय,
पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

कुलभूषण देशभूषण नाम,
तिनके चरणनि करूँ प्रणाम ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

जसरथ राजा के सुत कहे,
देश कलिंग पाँच सौ लहे।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान,
वन्दन करूँ जोरि जुग पान ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

समवसरण श्रीपार्श्व-जिनंद,
रेसन्दीगिरि नयनानन्द।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

वरदत्तादि पंच ऋषिराज,
ते बन्दौं नित धरम-जिहाज ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

मथुरापुर पवित्र उद्यान,
जम्बूस्वामीजी निर्वाण।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

चरमकेवली पंचम काल,
ते बन्दौं नित दीनदयाल ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

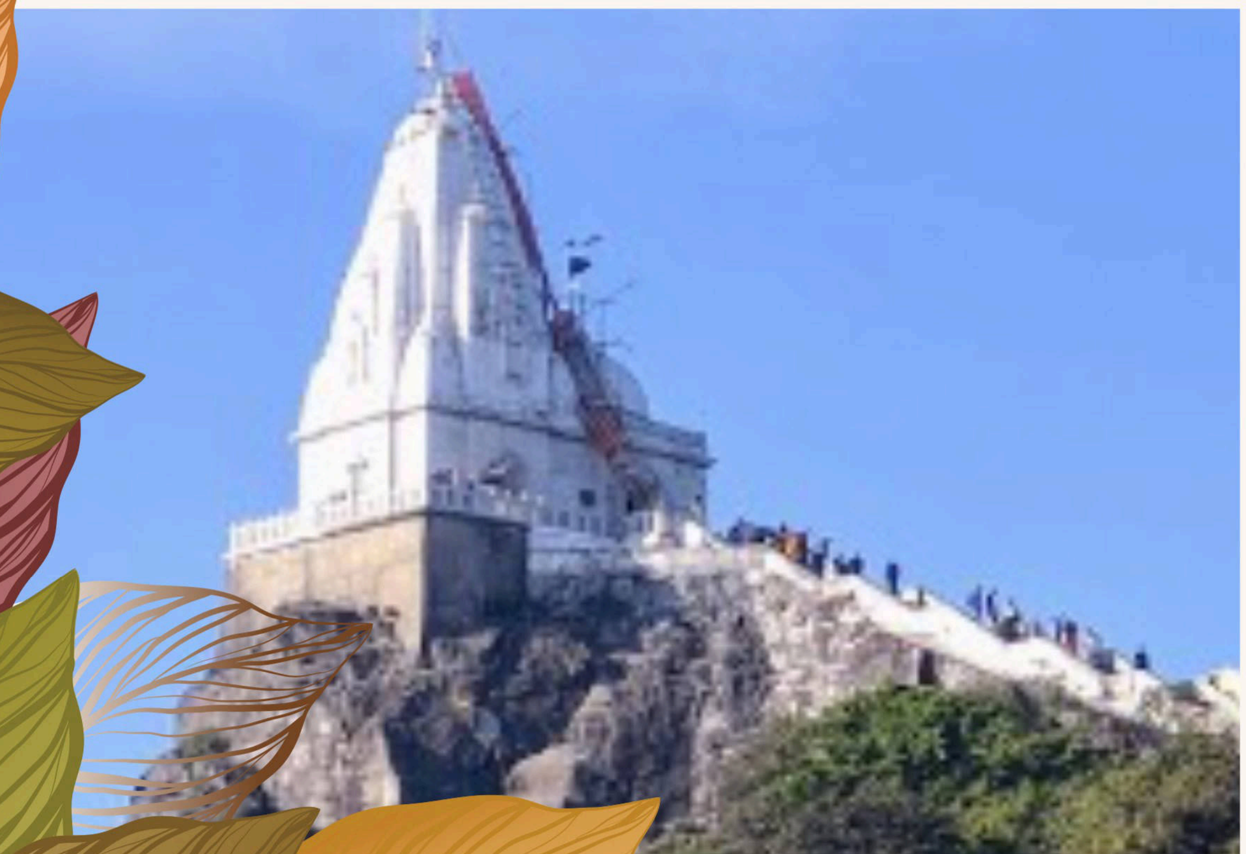

(चौपाई)

तीन लोक के तीरथ जहाँ,
नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

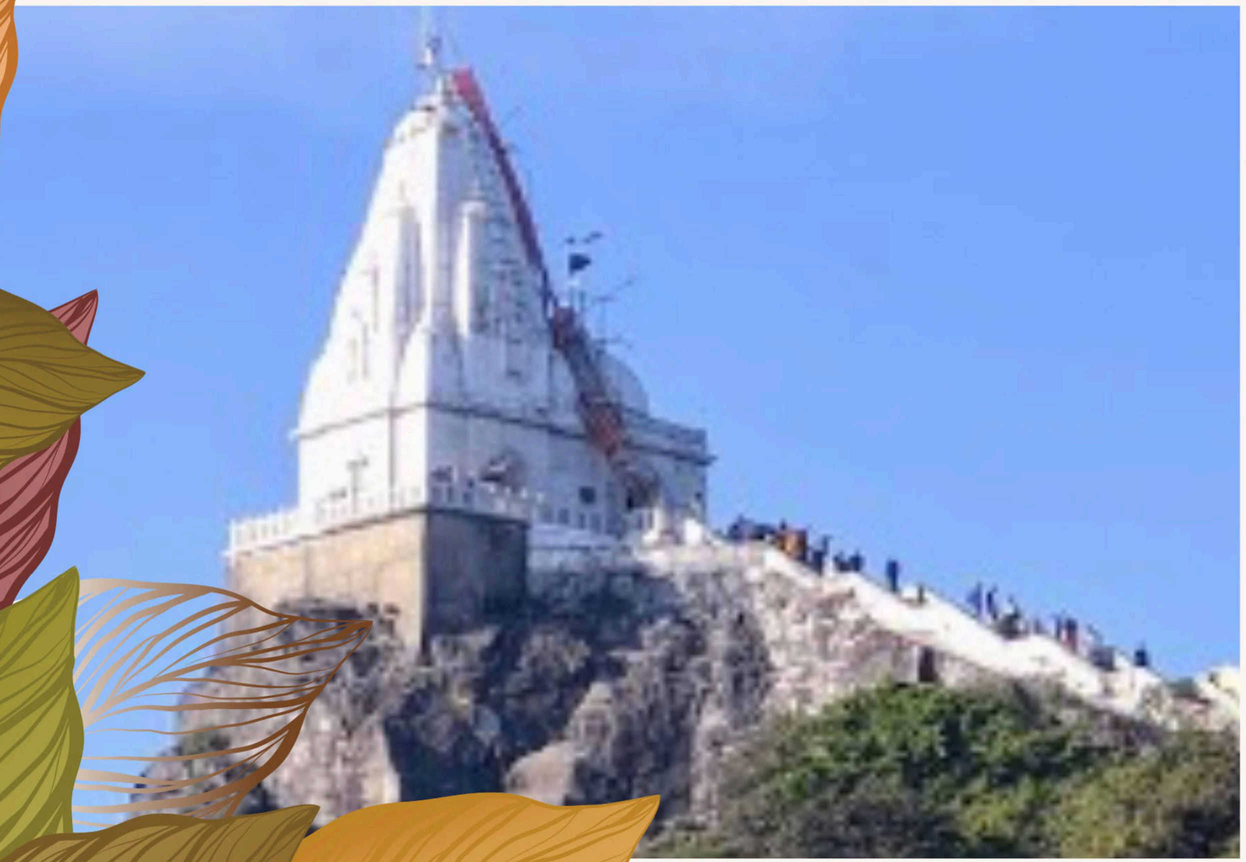

(चौपाई)

मन-वच-काय सहित सिरनाय,
वन्दन करहिं भविक गुणगाय ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

संवत् सतरह सौ इकताल,
आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।

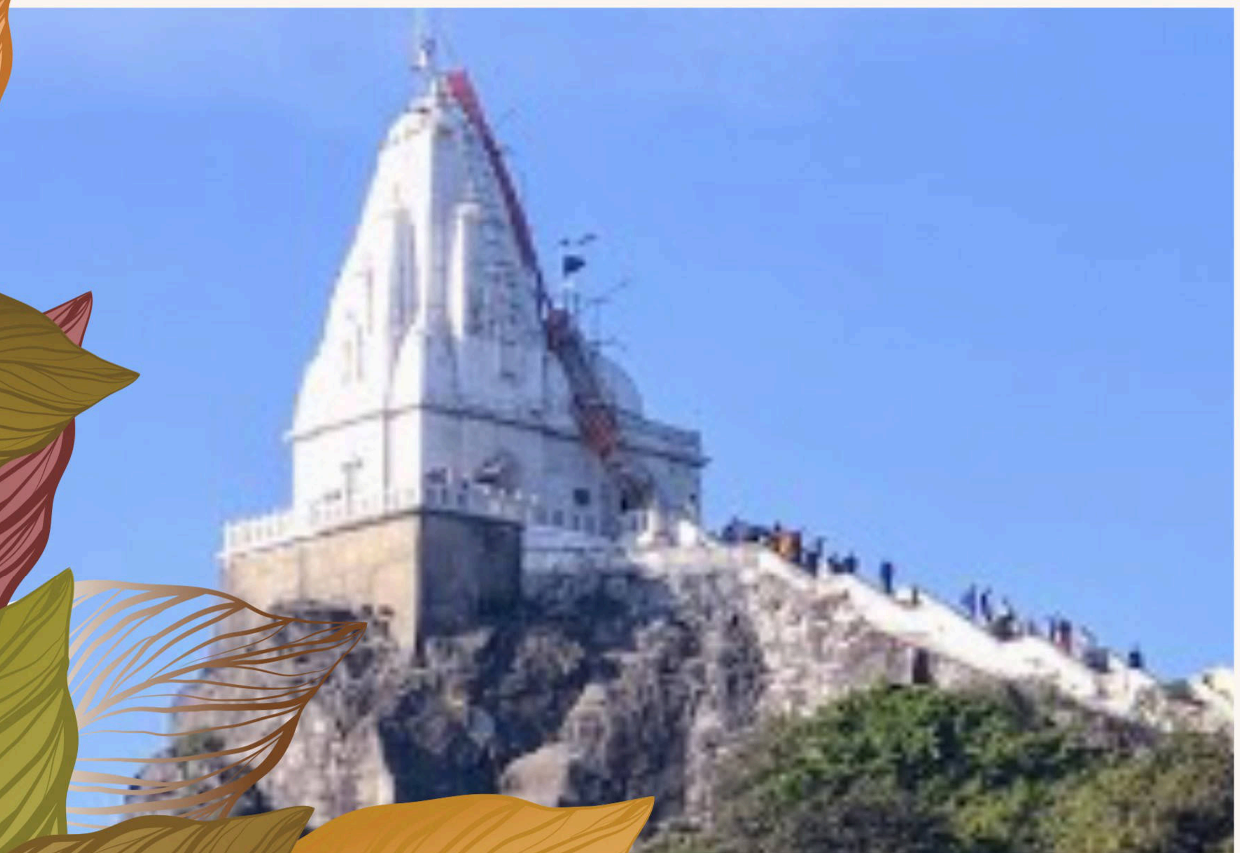

(चौपाई)

‘भैया’ वन्दन करहिं त्रिकाल,
जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु